International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2016; 2(5): 15-16
© 2016 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 05-07-2016
Accepted: 06-08-2016

श्रीमती काजल सक्सैना
एम.ए. (संस्कृत) एवं नेट, वरिष्ठ अध्यापक शा.म.ल.बा.क.उ.मा.वि. मुरार, ग्वालियर

Correspondence
श्रीमती काजल सक्सैना
एम.ए. (संस्कृत) एवं नेट, वरिष्ठ अध्यापक शा.म.ल.बा.क.उ.मा.वि. मुरार, ग्वालियर

भवभूतिकृत उत्तररामचरितम् के कल्पित नारी पात्रों का विश्व साहित्य में योगदान

श्रीमती काजल सक्सैना

भवभूति के उत्तररामचरितम् में नारी पात्रों की रंगीन कल्पना, भवभूति की नाट्य प्रतिभा की मौलिक सृष्टि है। उत्तररामचरितम् के कथावस्तु विधान में कल्पित नारी पात्रों का अपना एक विशिष्ट महत्त्व है। कल्पित नारी पात्र प्रकृति से सम्बन्धित है। यह प्रकृति के तत्त्व नाटक में इतनी गहराई से घुलमिल गए है कि अगर इसे नाट्य से हटा दिया जाए तो भवभूति का भावजगत् मरुभूमि के समान सूना हो जाएगा । कल्पित नारी पात्र जैसे तमसा मुरला आदि यहाँ सीता की तरह मूर्त जीवन्त पात्र के समान है।

> उत्तररामचरितम् के द्वितीय और तृतीय अंक में जन स्थान की वन देवता वासन्ती को, तृतीय अंक के विश्कम्भक में दो नदी देवताओं को, तृतीय अंक में सीता की सखी के रूप में नदी देवता तमसा को, छठें अंक के विश्कम्भक में विद्याधर मिथुन को ओर सातवें अंक के गर्भ नाटक में भगवती भागीरथी तथा देवी वसुन्धरा को प्रस्तुत किया गया है। ये भवभूति के कल्पित नारी पात्र है। जो नाटक की प्रख्यात वस्तु को नूतन रूप देने में सहायक बनाते है।

वासन्ती और तमसा भी सीता की प्रिय सखियाँ होने के नाते सीता से अत्यन्त स्नेह करती है। जब वासन्ती आत्रेयी के मुख से अपनी प्रिय सखी सीता के शापवाद को सुनती है तो मूर्छित हो जाती है। सीता के प्रति राम के कठोर व्यवहार से वह आष्चर्य चकित होकर राम को तीक्ष्ण उपालम्भ देती हुई कहती है –

> त्वं जीवितं, त्वमसि मे हृदयं द्वितीयं।
> त्वं कौमुदी नयनयोरमृतं त्वमङ्गे।
> इत्यादिभिः प्रियशतैरनुध्य मुग्धां
> तामेव शान्तमथवा किमतः परेण ।।[1]

इतना ही नहीं वह राम से यह भी कहती है कि आपको सीता से प्यारा यष है–

> अयि कठोर यशः किल ते प्रियं किमयषो ननु घोरमतः परम् ।
> किमभवद्विपिने हरिणीदृषः कथय नाथ कथं बत मन्यसे ।।[2]

बासन्ती कहती है कि हे कठोर ! तुम्हे यश प्यारा है, ऐसी प्रसिद्वी है, किन्तु इससे बढ़कर घोर अपयष क्या हो सकता है। कि जग्ङैंल में मृगाक्षी का क्या हाल हुआ । ऐसा कहते हुए वासन्ती राम को उलाहना देती है।

तृतीय अग्ङ्क में न केवल राम भागीरथी की कृपा से अदृष्य सीता को नहीं देख पाता अपितु वासन्ती के लिए भी सीता अदृष्य रहती है। इस अग्ङ्क में तो प्रकृति चित्रण पराकाष्ठा पर पहुँच जाता है। देवी वसुन्धरा तो राम के अनुरोध को मानो भूपति के आदेष के रूप में ग्रहण करती है ओर उसका पालन करती है। ये पात्र न केवल स्वयं की इच्छा से मनुष्य के समक्ष दृष्य या अदृश्य होते है। किन्तु अपने प्रभाव से कृपा पात्र मनुष्य को भी ऐसा ही बना देने में समर्थ स्वीकार किए गए है।

जनस्थान की वन देवता वासन्ती अपनी इच्छा से तपोधना आत्रेयी के समक्ष प्रकट हो जाती है। ऐसे ही गंगा और पृथ्वी गर्भनाटक के अन्त में राम के साथ बात करती है। इन पात्रों की अतिमानुशी शक्ति के बारे में एक रोचक बात यह भी है कि इनमें तारतम्य भी है।

तटस्थं नैराष्यादपि च कलुषं विप्रियवषाद्वियोगे
दीर्घेऽस्मिञ्झटिति घटनात्स्तम्भिगमिव।।[३]

सीता की मनोदशा के विषय में तमसा कहती है कि जान रही हूँ बेटी तुम्हारा हृदय इस समय पुनः समागम की आशा न होने से उदासीन है, किन्तु परित्याग रूप अप्रिय वृतान्त से रोष युक्त भी है। इस लम्बे वियोग में अप्रत्याशित समागम से विस्मय के कारण स्तब्ध राम के सौजन्य से प्रसन्न, प्रिय की शोकाकुल दशा से अत्यन्त शोकयुक्त, प्रेम से आर्द्र सा है।
सीता के वियोग में राम जब करूण पुकार करते है उस समय तमसा सीता को उद्बोधित करते हुए कहती है कि पुत्री! यह उचित ही है कि दुःखी लोगों के द्वारा दुःख का उपसमन किया जाना ही चाहिए । जिस प्रकार तडाग की जल वृद्धि अधिक हो जाने पर जल को निकाल देना ही प्रतिकार है। शोक से विक्षोभ होने पर रोने के द्वारा हृदय धारण किया जाता है।

पूरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया।
शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते।।[४]

विशेष रूप से रामभद्र के लिए रोना उचित ही है, जिनका संसार अर्थात् सांसारिक जीवन बहुत प्रकार के कष्टों से युक्त है।
अन्यत्र तमसा स्नेह कौतुक, मुस्कुराहट के साथ सीता से कहती है कि सीता प्रिय के स्पर्ष के सुख से, वायु से कम्पित, नूतन जल से सिंचित उद्गत कलियों से युक्त, कदम्ब की डाली की तरह स्वेद, रोमाऽच और कम्पन युक्त अर्चीं वाली हो गई हो।

सस्वेदरोमाञ्चितकम्पिताङ्गी जाता प्रियस्पर्षसुखेन वत्सा ।
मरुन्नवाम्भः प्रविधूतसिक्ता कदम्बयष्टिः स्फुटकोरकेव ।।[५]

राम और सीता के जीवन का अधिकांश भाग प्रकृति के प्रार्चैण में व्यतीत होता है। विपत्ति की घड़ी में सीता की कशलता का गम्भीर दायित्व सम्भालने वाली प्रकृति की दो विराट मूर्तियाँ है– भागीरथी गर्चैा और वसुन्धरा इनका आचरण और रूप मानवीय है। सीता जब अपने जीवन का अन्त करने के लिए गर्चैा में कूद पड़ती है और बाद में लव कुश का जन्म होता है। तब गर्चैा सीता की रक्षा कर दोनों बच्चों को महर्षि वाल्मीकी के संरक्षण में सौप देती है। 12 वर्ष बाद जब उन बच्चों की 12वीं वर्षगाठ पर गर्चैा सीता को आदेष देती है कि वे आज अपने कुल के देवता सूर्य की उपासना करे और गर्चैा ने ही उसे वरदान दिया था कि पृथ्वी पर विचरण करते हुए उसे कोई नहीं देख पाएगा । यहाँ गर्चैा माँ की तरह सीता का बेटीवत् ख्याल रखती है। सातवें अंक में गर्चैा सीता की जननी पृथ्वी को भी आष्वस्त करते हुए कहती है प्राणी को फल प्रदान करने में तत्पर भाग्य के दरवाजों को भला कौन बन्द कर सकता है–

को नाम पाकभिमुखस्य जन्तोर्द्वाराणि दैवस्य पिधातुमीष्टे।[६]

बारह वर्षो के बाद पंचवटी के चिरपरिचित वातावरण में अपने प्रिय श्रीराम के फीके, पीले, कृशकाय शरीर को देखकर सीता को चिररिक्त हृदय सुख–दुख के विशम भार से सहसा भर जाता है। उस समय सीता को नितान्त अकेला छोड़ना नाटकीय वस्तु विधान की दृष्टि से अनुचित होता इस दषा में सीता की मानसिक स्थिति और अधिक उलझ सकती थी और श्रीराम और सीता का मिलन मार्ग भी कष्टप्रद बन सकता था । इस स्थिति में कशल नाटककार ने अपनी दिव्य कल्पना द्वारा इन दो प्रकृति सुकुमारियों की सृष्टिकर वस्तु संविधान में नाटकीय औचित्य का योग्य निर्वाह किया है।

स्निग्धष्यामाः क्वचिदपरतो भीषणाभोगरूक्षाः
स्थाने स्थाने मुखरककुभो झाड्.कृतै निर्झराणाम् ।
एते तीर्थाश्रमगिरिसरिद्गर्त कांतारमिश्राः ।
संदृष्यन्ते परिचितभुवो दण्डकारण्यभागाः।। [७]

उपसंहार

नाटक में इन दिव्य पात्र की सीमित भूमिकाएँ है। किन्तु इन छोटी–छोटी भूमिकाओं वाले दिव्य पात्रों को नाटककार ने इस रूप में प्रस्तुत किया हे कि वे जीवंत से अनुभव होते है। ये सभी पात्र राम और सीता को अतिशय स्नेह करते है और उनके कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहते है। भगवती वसुंधरा तो सीता की जननी के रूप में राम की सास बनकर राम पर अधिकार पूर्वक गुस्सा करती है। कि उसने सीता को आखिर लोकापवाद के कारण गर्भावस्था की दारूण स्थिति में भी सीता को निर्जन वन प्रदेष में निर्वासित क्यों किया।
राम–सीता के विषम दुख को बाँटने और उनकी मानसिक गलतियों को सुलझाने में तथा उनके मिलन मार्ग का प्रशस्त करने के लिए ये देवियाँ नाटकीय मंच पर उपस्थित होती है और दोनो के दुख को और मानसिक स्थिति को समझ उनकी मानसिक ग्रन्थियों को सुलझाने का कार्य करती है। अगर ये दो प्रकृति कुमारियों का यह समावेश न होता तो तापसी सीता का जीवन अमोघ प्रेम एवं सहानुभूति एवं मैत्री और करूणा की दिव्य सुरभि से पाठकगण चिरकाल तक वंचित ही रह जाते है।
भवभूति के प्राकृतिक पात्र यर्थात् और स्वभाविक है। प्रकृति के मानवीयकरण की दृष्टि से भवभूति के कथा वस्तु पूर्णतः मौलिक है। प्राकृतिक नारी चरित्रों के चित्रण में मौलिकता, सहजता, सरसता, स्वभाविकता, कामनीयता, रमणीयता एवं भावुकता के दर्शन होते है। इस प्रकार भवभूति ने अपने प्रकृति सुंदरी को सहज रूप में प्रस्तुत कर संस्कृत साहित्य को नई दिशा प्रदान की है।
सप्तम् अंक के गर्भांक में गर्चैा और वसुन्धरा दोनों देवियों ने अपने गंभीर दायित्व का जैसा औचित्य पूर्ण और आदर्ष दृष्टान्त उपस्थित किया है वैसा किसी मानवीय पात्र से संभव नहीं था । दो विछुड़े हृदयों को पुनः जोडने में इन प्रकृति पात्रों का महत्वपूर्ण योगदान विश्वसाहित्य में सदा अमर रहेगा ।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. उत्तररामचरितम ३.२६
2. उत्तररामचरितम ३.२७
3. उत्तररामचरितम ३.१३
4. उत्तररामचरितम ३.२६
5. उत्तररामचरितम ३.४२
6. उत्तररामचरितम ७.४
7. उत्तररामचरितम २.१४